बैठती हैं और हमारी बातें सुनती हैं। बिहार, उड़ीसा, तमिलनाड, आंध्र, केरल, मैसूर, बंबई, गुजरात, राजस्थान, पंजाब और अब यहाँ भी हम यही देख रहे हैं। लोगों के दिल में यह पहचान होती है कि गरीबों का भला चाहनेवाला कौन है?

मिलकर रहो

यहाँपर जमीन की किल्लत है और जमीन की हद बाँध दी गयी है, फिर भी लोग प्यार से दान देते हैं। इस दान की हमें बहुत कद्र है। यह ठीक है कि जमीन का रकबा जो दान दिया जा रहा है,वह बहुत बहुत कम है, लेकिन जिस प्यार से दान दिया जा रहा है, वह प्यार कम नहीं है।

हम यहाँके लोगों से कहना चाहते हैं कि आप जंगल में रहते हो, बाल-बच्चों पर प्यार करते हो, मेहनत करते हो, पसीना बहाकर रोटी खाते हो, सो तो बहुत अच्छा है। लेकिन अब और एक बात आपको सीखनी है। वह भी कोई नयी नहीं है, पुरानी ही है और यह कि आप सब मिल-जुलकर रहो। एक होकर रहो। आपस-आपस में एक-दूसरे की मदद करो। गाँव को कुनबा समझो। जैसे एक कुनबे में माँ, बाप, बच्चे, बूढ़े होते हैं, वैसे ही गाँव के सभी लोग मिलकर एक कुनबा है, इस खयाल से देखो। गाँव में ५०, ६० घर होते हैं। इसलिए ऐसे छोटे-छोटे गाँवों में यह आसानी से हो सकेगा। जमीन गाँव की है, यूँ समझकर रहोगे तो गाँव की तरक्की होगी। जहाँ अलग-अलग मिलकियत है, वहाँ चैन नहीं है, सुख नहीं है।

भक्ति की कसौटी

देहातियों के दिल में परमेश्वर की भक्ति होती है, लेकिन यह भक्ति भजन तक ही महदूद होती है, वह काफी नहीं है। उसे जिन्दगी में लाना होगा और मजबूत बनाना होगा। हम सब परमात्मा, अल्लाह की औलाद हैं। इसलिए भाई-भाई बने रहेंगे और एक-दूसरे को मदद करेंगे तो गाँव की जिन्दगी में लुत्फ आयेगा। हमारी सबकी जिन्दगी इकट्ठा बीतेगी। ग्राम-सभा गाँव की मालिक रहेगी। गाँव की जिम्मेवारी हम सबकी होगी। खायेंगे तो हम सभी खायेंगे और मौका पड़ने पर सभी फाँका भी करेंगे। जो कुछ करेंगे, साथ करेंगे। सुख-दुःख बाँट लेंगे। गाँव की रोजमर्रा जरूरत की चीजें गाँव में ही बनायेंगे। घर-घर में लोगों को दस्तकारी मिलेगी। इस प्रदेश में छह महीने से ज्यादा काम नहीं होता। ऐसे समय में दस्तकारी मिलेगी तो वख्त जाया नहीं जायगा।

यह सब करने के लिए पहला काम तो यह करना होगा कि जमीन की मिलकियत अलग-अलग न रखकर गाँव की बनानी होगी। शादी में एक ही घर का पैसा खर्च न होगा। हर घर से थोड़-थोड़ा खर्च होगा। सभी मिलकर शादी का खर्च करेंगे। इस तरह हम अपनी मुश्तरका जिन्दगी बनायेंगे, तभी अल्लाह का फज्ल पायेंगे। गाँव का कुनबा बनायेंगे तो आप कुछ भी खोयेंगे नही, भर-भरकर पायेंगे, भगवान का प्यार पायेंगे।

भगवान याने कौन? ये जो सारे बैठे हैं, वे भगवान ही हैं, उसीके मुख्तलिफ रूप हैं। हम सब प्यार से रहें। किसीसे नफरत न करें। गाँव में किसीको भूखा न रखें। गाँव में कोई भूखा रहे तो सभीको तकलीफ होनी चाहिए। थोड़ा-थोड़ा पेट काटकर सभी अपना हिस्सा भूखे को देंगे तो उसे इमदाद मिलेगी, वह सुखी हो जायगा। हम कहना चाहते हैं कि वह सचमुच अल्लाह की इबादत होगी। 'राम कृष्ण रहमानु रहीम' ऐसे नाम लेने से भक्ति नहीं होगी। कुरान में बार-बार कहा है कि "जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और अमल करते हैं..." ईमान और अमल दोनों साथ-साथ रखते है। मुख में राम है तो हाथ में और दिल में भी राम होना चाहिए। यह होगा, तभी सच्ची भक्ति होगी। इसकी कसौटी कहाँ होगी? हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं या नहीं, मदद करते हैं या नहीं, इसी बात में होगी।

आपपर मेरा भरोसा है

यहाँ १०० कनाल जमीन मिली है। वह गरीबों में बाँटी जायगी। उससे गरीबों की जिम्मेवारी भी बढ़ेगी। उन्हें मेहनत-मशक्कत करनी होगी। यहाँके चार-पाँच भाईयों ने दान दिया है, यह काफी नहीं है इस जगह जितने लोगों के पास जमीन है, उन सबको अपनी जमीन का कुछ-न-कुछ हिस्सा देना चाहिए। जिसके पास १०० कनाल जमीन है, वह दो कनाल जमीन देगा तो उतने से काम नहीं चलेगा। हमें उससे ज्यादा मिलना चाहिए। हमें यहाँ १०० मालिक हैं तो १०० दानपत्र मिलने चाहिए और दान पत्र हासिल करने के लिए कारकून भी मिलने चाहिए। आप ही मेरे कारकून हैं।

मेरी कोई संस्था नहीं है और न मेरा कोई इदारा है। मेरा कांग्रेस पर हक नहीं है, नेशनल कान्फ्रेन्स पर हक नहीं है और डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स पर भी हक नहीं है। इन सब पार्टीवालों पर इन्सान के नाते मेरा हक है, पार्टी के नाते नहीं। ऐसे आप सब जो यहाँ बैठे हैं, उनपर मेरा हक है। मेरे दिल में सभी के लिए प्यार है, लेकिन मेरा किसीपर कानूनी हक नहीं है। इसलिए आपपर मेरा भरोसा है। आप ही मेरे कारकून बनिये और अपनी जमीन का एक हिस्सा भी दीजिये।

यह जो १०० कनाल जमीन मिली है, यह तो काम की शुरुआत है। जब इस गाँव में कोई भी बेजमीन नहीं रहेगा, जमीन की मुश्तरका मिल्कियत होगी, तभी यह काम खत्म होगा। इसलिए जैसे आप 'इलेक्शन' में काम करते हैं, वैसे ही इस काम में लगिये। हर गाँव में मीटिंग कीजिये। लोगों के पास पहुँचिये और सबको इस तहरीक का मक़सद समझाइये। ◆◆◆

अनुक्रम

१. लोकशाही की बुनियाद
पठानकोट २३ सितम्बर '५९ पृष्ठ ७३५
२. "सह नाववतु सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै"
सरमोली १ सितम्बर '५९ „ ७३७

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी